प्रश्न: भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था में आर्थिक नियोजन की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए। (250 शब्द)

उत्तर: आर्थिक लक्ष्य की प्राप्ति हेतु आर्थिक विकास की दर को गति देना आर्थिक नियोजन का एक महत्वपूर्ण आयाम है। यह कार्य आय में वृद्धि के साथ-साथ बचत, पूँजी निर्माण और निवेश की दर में वृद्धि से संभव है। इन प्रक्रियाओं की दर में वृद्धि हेतु आर्थिक नियोजन का सहारा लिया जा सकता है।

अतः इन परिस्थितियों में संसाधनों के समुचित अनुप्रयोग, वर्तमान गतिविधियों के साथ समन्वय और भविष्य की गतिविधियों को मार्गदर्शन देने के कारण आर्थिक नियोजन को विकास का एक महत्वपूर्ण उपकरण कहा जा सकता है।

किसी भी विकासशील अर्थव्यवस्था हेतु उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि के साथ-साथ बाजारी प्रक्रियाओं के साथ इसका समन्वय अनिवार्य होता है। बाजारी प्रक्रियाओं के तीव्र परिवर्तन से बाजार में कई अनियमितताएँ विद्यमान होती हैं जिन्हें दूर करने में आर्थिक नियोजन पूर्ण रूपेण सहायक है।

आर्थिक नियोजन निवेश की मात्रा और संरचना के निर्धारण का कार्य करता है। साथ ही अर्थव्यवस्था की संरचनात्मक अनम्यताओं को दूर करने में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान होता है। पुनः किसी भी विकासशील अर्थव्यवस्था हेतु अनिवार्य, अन्तर्क्षेत्रीय विकास में भी आर्थिक नियोजन सहायक है। इसका मूल कारण यह है कि इसके माध्यम से कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्रों में पारस्परिक अन्तर्निर्भरता विकसित की जा सकती है। आर्थिक नियोजन के अंतर्गत ऐसी अन्तर्निर्भरता के विकास से श्रम शक्ति का प्रबंधन करने के साथ-साथ संतुलित और समेकित विकास की संकल्पना को बल मिल सकता है।

पूँजी निर्माण की दर में वृद्धि और इसके माध्यम से निवेश की मात्रा में वृद्धि विकासशील अर्थव्यवस्थाओं का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। इसके लिए पूँजी के अंतर्प्रवाह में वृद्धि आवश्यक है। इस दृष्टिकोण से भी आर्थिक नियोजन की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके माध्यम से घरेलू और विदेशी व्यापार को सुदृढ़ बनाया जा सकता है। जो अंततः पूँजी के अंतर्प्रवाह में वृद्धि के साथ-साथ संपूर्ण वित्त प्रणाली का प्रबंधन करने में भी सहायक है।

स्पष्टतः विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में विकास के सभी आयाम आर्थिक नियोजन पर ही आधारित होते हैं तथा आर्थिक नियोजन उन सभी प्रक्रियाओं को प्रभावित करने में सक्षम है जो विकास, उनका समेकन तथा संवृद्धि सुनिश्चित करते हैं।

08/07/24